जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

एक किसान जैतून तोड़ रहा था और उन्हें पीसकर उनका तेल निकाल रहा था; उसके हाथ, उसकी बाहें और उसका पूरा शरीर तेल की खुशबू से महक रहे थे और वह लगातार अपना काम करता जा रहा था। क्षितिज पर सूरज ढल रहा था। जब सूरज के हल्के रंग आकाश में बिखरने लगे, तो वह आदमी रुका और उसने अपने बाग की ओर ध्यान से देखा — उसे दिखाई दीं पहाड़ियाँ, जैतून के पेड़ और वह झोपड़ी जहाँ वह अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसे लगता था कि यह दुनिया का सबसे सुन्दर कोना है।

"एमीलिओ!" उसकी पत्नी हेलेना, उनकी झोपड़ी से उसे आवाज़ दे रही थी। "एमीलिओ, जल्दी आओ! देखो हमसे मिलने कौन आया है।"

एमीलिओ पहाड़ी से नीचे उतर ही रहा था कि तभी उसे एक घोड़ागाड़ी जैसा कुछ नज़र आया। उस गाड़ी के पीछे एक बैंगनी रँग का रेशमी झण्डा लहरा रहा था जिस पर शाही प्रतीकचिह्न बना हुआ था।

आश्चर्य से एमीलिओ की आँखें खुली की खुली रह गईं। "महाराज?" उसने सोचा। "*हमारा* बाग देखने आए हैं?" वह और तेज़ चलने लगा। निस्सन्देह, जब वह अपनी झोपड़ी के पास पहुँचा तो उसने देखा कि सचमुच महाराज आए थे।

"प्रणाम महाराज," एमीलिओ ने कहा। "हमारा सौभाग्य है कि आप यहाँ आए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"

"प्रणाम, एमीलिओ," राजा ने कहा। "तुम्हारी पत्नी — " उसने हेलीना की ओर इशारा किया जो पास ही खड़ी थी, "हमें तुम्हारे बाग के बारे में बता रही थी। हम अपनी गाड़ी में यहाँ से गुज़र रहे थे, तभी हमें तुम्हारा बाग नज़र आया और उसकी सुन्दरता को देखने से हम खुद को रोक नहीं पाए।"

"धन्यवाद, महाराज," एमीलिओ ने कहा। "जी महाराज, हम यहाँ जैतून उगाते हैं और हर साल हम उसका तेल बाज़ार में बेचते हैं।"

राजा ने बाग में चारों ओर देखा, उसकी नज़र बार-बार तेल के कई सारे खुले कनस्तरों पर जा रही थी जो पास ही रखे हुए थे। तेल तरल सोने जैसा था, उसकी सुगन्ध उनके चारों तरफ़ बिखरी हुई थी, पूरा

वातावरण उसकी भीनी-भीनी खुशबू से महक रहा था। राजा ने अपने शासनकाल में अनगिनत बेशकीमती तेल देखे थे — फिर भी वह निश्चित तौर पर कह सकता था कि उसने अपने पूरे जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं देखा है।

राजा एमीलिओ और हेलेना की ओर मुड़ा। "हमें यह ज़मीन चाहिए और तुम लोग इसमें जितने भी जैतून उगाते हो और जितना भी तेल निकालते हो, वह सब हमें चाहिए।" उसने ऐलान कर दिया।

एमीलिओ यह सुनकर हैरान रह गया। उसने कहा, "मुझे . . . मुझे माफ़ कीजिए महाराज, पर मैं आपको यह ज़मीन नहीं दे सकता।"

"क्या मतलब है कि तुम मुझे यह ज़मीन नहीं दे सकते?" राजा को विश्वास ही नहीं हो रहा था। उसे किसी भी चीज़ के लिए न सुनने की आदत नहीं थी।

"महाराज, यह बाग हमारे पुरखों का है। पीढ़ियों से यह हमारे परिवार के पास रहा है। यह हमारा घर है। मैं इसे आपको नहीं दे सकता। यदि इसके अलावा मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ, कुछ भी — तो मुझे ऐसा करने में बहुत खुशी होगी।"

राजा ने एक क्षण के लिए कुछ नहीं कहा। उसने मन-ही-मन सोचा, "बेशक, मैं इस ज़मीन को ज़ब्त कर सकता हूँ, अख़िर मैं राजा हूँ।" पर फिर उसने अत्याचार के उन सभी आरोपों के बारे में सोचा जो इस कारण से उस पर लगाए जाएँगे और कैसे यह उसके शत्रुओं की लगाई आग में घी का काम करेगा। नहीं, नहीं, उसे और चालाकी से काम करना होगा।

"अब हम तुम्हें बताते हैं," राजा ने कहा। "अगर तुम हमें जैतून का अपना बाग नहीं दे सकते हो तो तुम्हें एक साल के लिए हमारे पास आकर हमारी ज़मीन पर काम करना होगा। तुम एक साल के लिए काम करोगे और हर वो काम करोगे जो हम तुम्हें बताएँगे।"

एमीलिओ ने राजा की यह आज्ञा मान ली और अगली सुबह वह राजप्रांगण पहुँच गया।

और जब वह वहाँ पहुँचा तब उसने जो देखा, वह देखकर सदमे से उसकी चीख निकल गई। सभी पेड़ दुर्बल और बीमार दिख रहे थे, उनके पत्ते सूख गए थे और पीले पड़ गए थे, उनकी कमज़ोर जड़ें ज़मीन से बाहर झाँक रही थीं। मिट्टी, रेत की तरह सूख गई थी।

एमीलिओ यह सब देख रहा था, तभी पीछे से राजा का एक सेवक उसके पास आया।

“महाराज ने आदेश दिया है कि तुम दो दिन में इन पेड़ों को पुनर्जीवित कर दो, इन्हें फिर से हरा-भरा कर दो,” सेवक ने कहा।

“दो दिन?!” एमीलिओ ने हैरान होते हुए कहा। “कैसे. . .?”

“दो दिन,” सेवक ने फिर से बताया। “यह लो।” उसने एमीलिओ के हाथ में एक ऐसा फावड़ा थमा दिया जिसमें धार ही नहीं थी।

एमीलिओ टहनी-से दिखने वाले पेड़ों की ओर मुड़ा, उसके कन्धे निराशा से झुके हुए थे। पर वो करता भी तो क्या? उसने अपना काम शुरू कर दिया।

बाकी के पूरे दिन और पूरी रात उसने कड़ी महनत की, पेड़ों की देखभाल की, मिट्टी को जोता और ज़मीन को उसकी जीवनदायिनी ऊर्जा लौटाई। दोपहर की धूप कड़ी और कठोर थी और रात की चिपचिपी नमी भी कुछ कम नहीं थी।

अगला दिन ख़त्म होते-होते एमीलिओ मिट्टी में सना हुआ था और थकान से चूर-चूर हो चुका था। फिर भी — चमत्कार हो गया — उसने कर दिखाया। धरती फिर से नरम और नम हो गई थी; सूखी और बेजान टहनियों व पत्तियों की छटाई हो जाने के बाद पेड़ों में नया जीवन दिख रहा था।

राजमहल से महाराज ने देखा, उनके चहरे पर अप्रसन्नता के भाव थे।

“क्या हुआ, महोदय?” सेवक ने पूछा। “क्या आप नहीं चाहते थे कि एमीलिओ इन पेड़ों को पुनर्जीवित कर दे?”

“नहीं,” राजा ने जवाब दिया। “मैं उसे हराना चाहता हूँ। क्योंकि तब मैं उसकी ज़मीन ज़ब्त कर सकता हूँ।”

“महोदय,” सेवक ने हिचकिचाते हुए कहा, “क्या यह ज़रूरी है? निस्सन्देह हमारे पास ज़मीन का एक दूसरा टुकड़ा है जो बिल्कुल उपयुक्त रहेगा।”

“नहीं!” राजा ने कहा, अब तक उसका लालच उस पर इतना हावी हो चुका था कि वह कुछ भी सुनने-समझने की हालत में नहीं था। “तुमने वो जैतून नहीं देखे, न ही तुमने उनके तेल की महक सूँघी है। जाओ — उस आदमी को और काम दो।”

और इसी तरह ऐसा चलता रहा — दिनों, हफ़्तों, महीनों तक। काम और भी कठिन होता गया, बताए गए कार्य और भी बेतुके होते गए। अस्सी नए पेड़ लगाओ, राजा ने कहा। अस्सी पेड़ जड़ से उखड़ो। हर बार एमीलिओ किसी भी तरह, बताया गया कार्य पूरा कर देता। फिर भी हर बार वह सोचता कि अब वह टूट जाएगा।

“राजा मुझे इतना काम दे रहा है जिससे मैं मर जाऊँ!” एमीलिओ ने एक शाम खाना खाते समय अपनी पत्नी से कहा। उसने अपना सर पकड़ लिया।

“जीवन कितना अच्छा था, जब केवल हम दोनों और हमारा बाग था,” कहते-कहते वह सिसक-सिसक कर रोने लगा।

“हाँ, शायद,” हेलेना ने कहा। “पर अब पीछे मुड़कर देखने का क्या फ़ायदा? अब यही तुम्हारे जीवन की परिस्थिती है।”

“हाँ, पर मैं इन परिस्थितियों से बाहर निकलना चाहता हूँ,” एमीलिओ ने कहा।

“पर तुम इससे बाहर कैसे निकलोगे?” हेलेना ने पूछा। “जहाँ तक नज़र जाती है, राजा का ही राज्य है और उसी की हुकूमत है।”

“कोई तो रास्ता होगा।”

हेलेना बहुत समझदार और बुद्धिमान स्त्री थी। “बाहर निलकने का रास्ता है, एमीलिओ। तुम्हें अपना कर्तव्य पूरा करना होगा। आगे-पीछे कुछ मत देखो। बस अपना काम करते रहो।”

तो एमीलिओ बस डटा रहा। वह हर रोज़ सुबह-सुबह पहुँच जाता और देर शाम को वहाँ से चलता। चाहे उसके सामने कितना ही बड़ा कार्य होता, वह कितना ही असम्भव लगता, एमीलिओ उसे पूरा करने का मार्ग खोज ही लेता।

“इस तरह काम नहीं बनेगा!” राजा ने चिड़चिड़ाकर अपने सेवक से कहा। “हमें इस आदमी से छुटकारा पाने के लिए कुछ और सोचना होगा।”

“हूँऽऽ. . .,” सेवक बोला। “मेरे पास एक तरकीब है।” उसने राजा को वह तरकीब बताई और उसने अपना सिर हिलाकर हामी भरी।

***

अगले दिन सेवक बगीचे में एमीलिओ से मिला।

“नमस्ते, एमीलिओ,” उसने झट से कहा। “मेरे पास तुम्हारे लिए राजा का आदेश है।”

“हाँ, बताओ क्या है?”

“महाराज का कहना है और मैं उन्हीं के शब्दों में तुम्हें बताता हूँ : *‘जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ। लाओ वो, जो पता नहीं हो।’*”

“वहाँ जाओ — माफ़ करो, क्या कहा तुमने?” एमीलिओ ने पूछा, उसे समझ नहीं आया कि सेवक क्या कह रहा था।

“जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ। लाओ वो, जो पता नहीं हो।”

एमीलिओ ने सेवक की ओर हैरानी से देखा। “म-मैं वहाँ कैसे जाऊँ जो पता नहीं कहाँ है? और वह कैसे लाऊँ जो मुझे *पता नहीं हो।”*

“मैं तो केवल सन्देश दे रहा हूँ,” सेवक ने कहा। “मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।” और ऐसा कहकर, वह चला गया।

उस दिन शाम को एमीलिओ ने अपनी पत्नी को अपनी दुविधा बताई। एक बार फिर उसने अपना सर पकड़ लिया था।

“मुझे पता है कि मैं तुमसे पहले भी यह कह चुका हूँ, पर यह सचमुच एक असम्भव कार्य है,” एमीलिओ ने कहा। *“जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ। लाओ वो, जो पता नहीं हो।”*

हेलेना अपने होंठ दबाते हुए गहराई से सोचने लगी। “यह एक पहेली है,” उसने कहा। “पर हो सकता है कोई ऐसा हो जो तुम्हारी मदद कर सके।”

“अरे हाँ?” एमीलिओ ने ऊपर देखते हुए कहा। “कौन है वह?”

“एक बुद्धिमान वृद्ध महिला हैं जिनके बारे में लोग बताया करते हैं। कहा जाता है कि वह उन सभी की मदद करती हैं जो . . . मदद खोज रहे होते हैं।”

“और यह बुद्धिमान वृद्ध महिला मिलेंगी कहाँ?”

“किसी को भी ठीक-से पता नहीं है, पर मैंने सुना है कि अगर तुम जंगल पार करके, उसके आगे जो रास्ता गया है, उस पर चलो और फिर थोड़ा और चलो तब तुम उनके घर पहुँच सकते हो।”

ऐसा लग रहा था कि एमीलिओ को विश्वास ही नहीं हो रहा है। “मेरी बात सुनो,” हेलेना ने प्यार से कहा। “तुम्हें इस बुद्धिमान वृद्ध महिला से मिलना चाहिए। मुझे लगता है वे तुम्हारी मदद कर सकती हैं।”

इसलिए मन में प्रश्न व दुविधा होने के बावजूद, एमीलिओ निकल पड़ा। उसने जंगल पार किया और यह पदयात्रा समाप्त होने पर भी वह चलता रहा। और चलता रहा। और भटकता रहा। उसे समय का अनुमान न रहा। वह हार मानने ही वाला था जब उसे दूर कुछ दिखाई दिया जो एक छोटी-सी कुटिया जैसा था। खिड़की में रोशनी झिलमिलाती रही थी।

“क्या यह वही हो सकता है?” वह सोचने लगा। “बुद्धिमान वृद्ध महिला का घर?” वह दौड़कर वहाँ पहुँचा और दरवाज़ा खटखटाया।

दरवाज़ा खुल गया और चौखट पर खड़ी थीं एक महिला जिनके सर पर चांदी जैसे सफ़ेद बालों का मुकुट और चहरे पर झुर्रियाँ थीं। उनके व्यक्तित्व में एक चमक थी जो वर्णन से परे थी — एमीलिओ ने कभी-भी ऐसा कुछ नहीं देखा था। यह ऐसा था जैसे उनकी सत्ता से सूर्य का प्रकाश निकल रहा हो, या शायद यह चाँद था। उनकी आँखों की चमक यह बता रही थी कि वे सब जानती हैं।

“कहो, पुत्र?” उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ में मिठास और गहराई थी।

“नमस्कार अम्मा,” एमीलिओ ने कहा, “मैं मदद की उम्मीद लेकर आपके पास आया हूँ।” उसे किसी कारण से लगा कि वह इन महिला से बात कर सकता है, कि अगर वह उन्हें अपनी परिस्थिति के बारे में बताएगा तो वे समझेंगी। इसलिए बिना कोई भूमिका बाँधे उसने सीधे-सीधे अपनी पूरी व्यथा उन्हें सुना दी — राजा का उससे तब तक काम कराना जब तक वह थक कर चूर नहीं हो जाता था, वे कार्य जो और भी असम्भव व दुस्तर होते गए और आख़िरकार यह — यह निर्देश कि *जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ। लाओ वो, जो पता नहीं हो।*

एमीलिओ ने जब अपनी पूरी बात कह दी, तब उन महिला ने उसके कन्धे पर हाथ रखा और वे मुस्कराईं।

“तो तुम वहाँ आ गए हो,” उन्होंने कहा। “यहाँ रुको।” वे अपने घर के अन्दर चली गईं।

एक क्षण बाद वे वापस दरवाज़े पर आईं, उनके हाथों में एक छोटी-सी गठरी थी। वह एक भूरे रंग के कागज़ में सफ़ाई से लिपटी हुई थी।

“क्या तुम्हें पता है कि तुम कहाँ हो?” उन्होंने एमीलिओ से पूछा।

“मैं आपकी कुटिया में हूँ,” उसने कहा।

“पर क्या तुम्हें पता है कि मेरी कुटिया कहाँ है?”

“मुझे लगता है कि अब मुझे पता है। पर मुझे पहले नहीं पता था। अरे — अरे ठहरिए!” एमीलिओ ने उत्सुक्तापूर्वक कहा। आख़िरकार उसे समझ में आने लगा। *“जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ . . .”*

“हाँ, पुत्र,” उस बुद्धिमान महिला ने कहा। “अब, यह लो” — उन्होंने उसके हाथ में वह गठरी दी — “और इसे सीधे राजा के पास ले जाओ। और अगर राजा कहे कि यह वह नहीं है जो उसने तुम्हें लाने के लिए भेजा था, तो तुम कहोगे कि तुम इसे समुद्र किनारे लेजाकर तोड़ दोगे। और समुद्र की ओर जाते-जाते तुम एक डंडी उठाना और इसे बजाने लगना।”

एमीलिओ एकटक उनकी ओर देखता रहा।

“तो अब जाओ,” बुद्धिमान महिला ने कहा, उनकी आँखों में एक चमक थी।

एमीलिओ ने धीरे-से अपना सिर हिलाया, उसके चहरे पर आशंका और आशा के मिश्रित भाव थे। उसने बुद्धिमान वृद्ध महिला को धन्यवाद दिया और वापसी की लम्बी यात्रा आरम्भ कर दी।

और अन्ततः जब वह राजप्रांगण पहुँचा तो राजा को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।

“महाराज,” एमीलिओ ने दरबार में आकर यह ऐलान किया, “आपने जैसा कहा था मैंने वैसा ही किया। मैं वहाँ गया, *जो पता नहीं कहाँ है।* और मैं *यह* लेकर वापस आया हूँ।” उसने गठरी आगे बढ़ा दी।

“वह क्या है?” राजा ने पूछा।

“मुझे नहीं पता,” एमीलिओ ने कहा।

राजा के चहरे पर सन्देह के भाव थे, उसने गठरी छीनी और भूरे रंग का कागज़ उतारा। उसमें एक छोटा-सा डिब्बा था जिसके ऊपर पतली-सी, मोम-जैसी परत थी — एक ढोल।

राजा ने रोशनी के सामने ढोल को उठाया, उसकी भौहें तनी थीं।

“तुम अवश्य ही ग़लत स्थान पर चले गए,” उसने झट से कहा, और ढोल एमीलिओ को वापस थमा दिया। “यह तुम सही चीज़ लेकर वापस नहीं आए हो। और क्योंकि तुमने अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया है इसलिए मैं अपने सिपाहियों को तुम्हारी ज़मीन, तुम्हारी झोपड़ी, तुम्हारे जैतून के पेड़ — सब कुछ लेने भेजूँगा।”

“जी, महाराज,” एमीलिओ ने कहा। “परन्तु, क्योंकि मैं गलत चीज़ लेकर वापस आया हूँ इसलिए मुझे इसे समुद्र पर ले जाकर तोड़ देना चाहिए।” और इससे पहले कि राजा कुछ जवाब दे पाता, एमीलिओ दरबार से बाहर चला गया।

समुद्रतट के रास्ते पर, एमीलिओ को सड़क के किनारे कई सारी चिकनी डंडियाँ मिलीं। उसे बुद्धिमान महिला की सलाह याद आ गई और उसने एक डंडी उठाई और ढोल को ज़ोर-ज़ोर से पीटना शुरू कर दिया।

ढम! उस छोटे-से ढोल के हिसाब से उसकी गूँज बहुत असाधारण थी। *ढम!* धीरे-धीरे एमीलिओ उसे सुर में बजाने लगा। *ढम!* उसके सब ओर तेज़ आवाज़ गूँज रही थी। *ढम!* आवाज़ उसके अन्दर थी। *ढम!* आवाज़ उसमें बह रही थी। *ढम!* या फिर सचमुच वह स्वयं ही आवाज़ था?

वह चलता गया और ढोल बजाता गया, उसकी जागरूकता और गहरी, और गहरी होती गई। राजा, असम्भव कार्य, घर खो देने का भय — अचानक यह सब उससे बहुत दूर चला गया। उसका मन शान्त हो गया। कोई विचार नहीं थे, बस आवाज़ थी, बस मौन था।

और यदि एमीलिओ ने अपने आस-पास देखा होता, तो उसे पता चल जाता कि वास्तव में उसके पीछे भीड़ इकट्ठा होती जा रही है। वे भी ढोल की आवाज़ से मन्त्रमुग्ध हो रहे थे; वे भी उस ढोल की ताल पर कदम बढ़ा रहे थे। यहाँ तक की जिन सैनिकों को राजा ने एमीलिओ की ज़मीन को ज़ब्त करने भेजा था, वे मार्ग में ही रुक गए थे। वे भी ताल के साथ चल रहे थे। राजा चिल्ला-चिल्लाकर उन्हें बुला रहा था पर इस सब का कोई असर नहीं हुआ। वे ऐसे आदेश का पालन कर रहे थे जो इससे भी अधिक शक्तिशाली था।

जब तक एमीलिओ समुद्रपट पर पहुँचा, तब तक प्रकाश से उसका रूप बदल चुका था। उसकी पूरी सत्ता से प्रकाश प्रसरित हो रहा था। और आख़री टंकार के साथ, ऐसी टंकार जो पूरे राज्य में तरंगित और प्रतिध्वनित हुई, उसने ढोल तोड़ दिया और उसके टुकड़े उछलकर समुद्र में फेक दिए।

जाओ वहाँ, पर पता नहीं कहाँ। लाओ वो, जो पता नहीं हो, एमीलिओ ने खुद से बुदबुदाकर कहा।

बस अब वह जानता था : वह हमेशा से वहाँ था। वह हमेशा से 'वह' था।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कहानी लियो टॉलस्टॉय के लेख "The Empty Drum" से प्रेरित है।